''नेताजी सुभाष बोस एवं आजाद हिन्द फौज की विरासत'' विषय पर दिनांक 6 अगस्त 2015 को नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी का भाषण

1. ''नेताजी सुभाष बोस एवं आजाद हिन्द फौज की विरासत'' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में आकर मुझे गर्व एवं खुशी का एहसास हो रहा है। सर्वप्रथम मैं हमारे स्वाभाविक बहादुर नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस एवं उनके नेतृत्व में भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़े आज़ाद हिन्द फौज के वीर जवानों को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि प्रकट करती हूं। मुझे बहुत खुशी है कि नेताजी सुभाष बोस–आईएनए ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस सम्मेलन के माध्यम से नेताजी का मातृभूमि के प्रति प्रेम, उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व एवं करिश्माई नेतृत्व को स्मरण करने के लिए हम सब एकत्र हुए हैं।

2. मित्रो! नेताजी का प्रभावी व्यक्तित्व, स्पष्टवादिता एवं निर्भीक चरित्र, अदम्य साहस और ऊंचा कद वास्तव में अतुलनीय है। अनेक कठिनाइयों एवं व्यक्तिगत परेशानियों के बाद भी उन्होंने यह दिखा दिया कि यदि मन में लगन हो तो आप कोई भी काम कर सकते हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य देश को आजाद कराना था और उसके लिए उन्होंने हर वह यत्न किया जो वह कर सकते थे। महात्मा गांधी के शब्दों में 'उनकी देशभक्ति अद्वितीय है और उनकी बहादुरी उनके

कर्तव्यों से झलकती है।' उनकी संगठन क्षमता का तो क्या कहना? उनके वक्तव्यों एवं विचारों में इतना असर था कि लोग उनके अनुयायी बन जाते थे। तभी तो उन्होंने अकेले ही एक ऐसी सेना का गठन किया जो हर पांत से अलग था, जिसके लड़ाके बड़े वीर, अनुशासित, दृढ़ संकल्पी एवं मातृभूमि की रक्षा हेतु लड़ने–मरने को तैयार थे। चाहे वे पुरुष हो अथवा स्त्री, सभी में उन्होंने देशभक्ति की अलख जगा दी थी।

3. उनकी यह सेना निर्विवाद रूप से धर्म, पंथ, जाति, लिंग सभी रूपों में निरपेक्ष थी तथा उनका एकमात्र लक्ष्य बेहद साफ था। उनके कथनों में यह बहुत प्रसिद्ध है– ''इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हममें से कौन भारत को स्वतंत्र देखने के लिए जीवित रहेगा। भारत आजाद होगा और इसके लिए हम वह सब कुछ करेंगे, यही काफी है।'' यही उनकी महानता और दूरदर्शिता भी थी।

4. नेताजी का दर्शन एवं सिद्धांत बहुत ही विलक्षण था। वे कुशल नेतृत्वकर्ता थे एवं युवाओं को एकजुट होकर देश के हित में कार्य करने पर जोर देते थे। वे चाहते थे कि हमारे देश के युवाओं में राजनीतिक चेतना जगे एवं वे तन–मन–धन से राष्ट्र सेवा में लगें। उन्होंने अपने जोशपूर्ण भाषणों से देश को जगाने का काम किया। उन्हें अपने पर विश्वास था तथा वे लोगों को विश्वास में लेने में कामयाब होते थे। यही कारण है कि वे शीघ्र ही लोकप्रियता के शिखर पर जा पहुंचे। लेकिन

अर्जुन की तरह उनकी दृष्टि अपने लक्ष्य पर टिकी थी, वह थी ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्ति और स्वराज की स्थापना तथा राष्ट्रनिर्माण के कार्य में शीघ्र ही जुट जाना।

5. नेताजी का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक में हुआ था, जो वर्तमान में उड़ीसा में पड़ता है। वे बचपन से अत्यंत स्वाभिमानी, कुशाग्रबुद्धि एवं मिलनसार थे। भारतीय परंपराओं में पले–बढ़े एवं प्रतिभाशाली भाइयों के अनुज सुभाषचन्द्र बोस का अकादमिक करियर अत्यंत उत्कृष्ट था एवं सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कीं। अपने बड़े भाई की तरह इन्होंने भी भारतीय सिविल सेवा की परीक्षा पास की और सरकारी अधिकारी बन गए। परंतु उन्होंने औपनिवेशिक सरकार के अधीन काम करना उचित न समझा और उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया एवं देश को आज़ाद कराने के अपने लक्ष्य में जुट गए।

6. उनका मानना था कि ''राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् से प्रेरित है।'' अतः गुलामी से जल्द–से–जल्द मुक्ति कैसे मिले, इस पर निरंतर चिंतन करते रहना ही उनका कार्य था। इसी को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने स्वराज नामक समाचार पत्र का बंगाल से प्रकाशन शुरू किया तथा 'फोरवर्ड' नामक समाचार पत्र के सम्पादक बन गए जो राष्ट्रवाद की विचारधारा का समर्थन करती थी।

इसके लिए उन्हें 1925 में गिरफ्तार कर मांडले जेल में डाल दिया गया।

7. जेल से निकलने पर उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महासचिव का पद दिया गया एवं वे जवाहर लाल नेहरू के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ने लगे। धीरे–धीरे वे कांग्रेस के सर्वमान्य नेता बन गए तथा उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने आजादी के आन्दोलन को गति देना शुरू कर दिया।

8. अंग्रेजी राज के अत्याचारी और बर्बर व्यवहार पर उनकी एक टिप्पणी बहुत महत्वपूर्ण है। उनके निर्भीक एवं बेबाक व्यक्तित्व को इन बातों से समझा जा सकता है। उन्होंने एक बार कहा था:–

"याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।"

9. देश को आजादी दिलाने के उनके प्रयासों के फलस्वरूप उन्होंने सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज का गठन किया जिसमें उन्होंने युद्धबंदियों तथा कई देशप्रेमी लोगों को शामिल किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मौके के नजाकत को देखते हुए उन्होंने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने "दिल्ली चलो" का नारा दिया। उन्होंने नारा दिया कि "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"

10. 21 अक्तूबर 1943 को नेताजी ने एक साथ बर्मा, इम्फाल और कोहिमा में मोर्चा खोलकर युद्ध में जीत हासिल की तथा अपने आपको आज़ाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति के रूप में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई जिसे तबके कई शासनाध्यक्षों ने मान्यता दी।

11. देश के स्वाभाविक नेता होने के बावजूद उन्होंने महात्मा गांधी, जिन्हें वे राष्ट्रपिता कहकर संबोधित करते थे, के प्रति विशेष अनुराग उनके मन में था। जब वे 6 जुलाई 1944 को आजाद हिन्द फौज के नेता के तौर पर कोहिमा में निर्णायक युद्ध लड़ रहे थे तो उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक संदेश जारी कर उनसे शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद मांगा था।

12. नेताजी की सोच अत्यंत प्रगतिवादी थी एवं वे समय से काफी आगे थे। वे वास्तव में भारतीयता एवं समतामूलक समाज के पक्षधर थे। यही कारण है कि जब उन्होंने अपनी सेना का गठन किया तो उसमें कोई भेद नहीं था। ''ना कोई छोटा ना बड़ा, ना कोई खोटा ना खरा'', यही उनका भाव था जिसके कारण उनके प्रशंसकों की संख्या आज भी इतनी अधिक है। उनके द्वारा बोला गया नारा ''जय हिन्द'' आज भी हमारे सैनिकों ही नहीं बल्कि आम जनता को भी देशभक्ति के जोश से भर देता है।

13. नेताजी महिलाओं को शक्ति प्रदान करने के घोर समर्थक थे। उनको उनके मन के अनुरूप पेशा चुनने एवं अपने सपनों को पूरा करने में वे हमेशा महिलाओं के साथ थे। अपनी भतीजी को लिखे गए पत्रों में से एक का मैं उद्धरण देती हूं–

''महिलाओं का जीवन किसी भी प्रकार से पुरुषों से कम महत्वपूर्ण नहीं है और किसी भी महिला के जीवन का उद्देश्य बच्चे पैदा करना अथवा भोजन बनाना ही नहीं है। यदि वे किसी को आदर्श बनाती हैं और उनका अनुसरण करें, तो उनका जीवन भी जीवंतता से पूर्ण हो सकता है।''

14. हम सभी अवगत हैं कि उन्होंने लगभग 1000 महिलाओं की एक महिला रेजीमेंट रानी झांसी रेजिमेंट बनाई थी जिनमें महिलाओं को कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में सैन्य कार्यवाही में शामिल होने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। हम सभी लोग जानते हैं कि इन महिलाओं ने युद्ध में पुरुषों के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर जबर्दस्त योगदान दिया एवं कड़ा प्रतिरोध प्रस्तुत किया था। निस्संदेह यह उस समय का सबसे क्रांतिकारी एवं प्रगतिवादी कदम था। इंडिया इंडिपेंडेंस लीग की महिला शाखा को संबोधित करते हुए नेताजी ने कहा था और मैं उद्धृत करती हूं:–

"यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप कितने बन्दूक लेकर चलती हैं अथवा कितने कारतूस फायर करती हैं, यह वह आध्यात्मिक शक्ति हैं जो आपके बहादुरीपूर्ण करतबों से सृजित होती हैं और यही महत्वपूर्ण बात है।"

15. यदि मैं तुलना करूं तो मैं यह कह सकती हूं कि स्वतंत्र भारत को भी महिलाओं को भारतीय सेना में शामिल करने में 45 वर्ष का लम्बा समय लग गया। अतः, मैं उस महान नेता की प्रगतिवादी एवं महिलावादी सोच को सलाम करती हूं।

16. मित्रो, जब भी आप शालीनता, स्पष्टवादिता और सम व्यवहार की बात करते हैं तो आपके सामने कई चरित्र उभरकर सामने आते हैं। उनमें सर्वप्रथम नेताजी का अक्स हमारे सामने होता है। एक आत्मसम्मान, गर्व एवं स्वावलम्बन से ओत–प्रोत व्यक्तित्व हमारे लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत है। नेताजी की एक और बात हमें प्रेरित करती है कि उन्होंने उस समय में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अंतराष्ट्रीय कूटनीति को अपने पक्ष में करने की दिशा में कितना बेहतरीन प्रयास किया था। वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए बिना किसी आधुनिक सुविधा के निरंतर लम्बी–लम्बी यात्राएं कीं और बेहतर कूटनीतिक एवं रणनीतिक साझीदार ढूंढने के लिए प्रयत्नरत रहे। उनके जीवन का एक मिशन था और वे उसे पूरा करने के लिए हमेशा तैयार थे।

17. मित्रो, यह वक्त है उनके द्वारा स्थापित किए गए देशभक्ति, देशसेवा के मानदंडों को कायम रखने का, नवनेतृत्व के निर्माण का, कुछ अलग कर गुजरने का। परंतु, यह परिवर्तन तभी संभव है, जब युवकों एवं युवतियों की नई पीढ़ी पूर्णतः शिक्षित और प्रशिक्षित होकर दुनिया के सामने नया उदाहरण प्रस्तुत करे। उनकी मुट्ठी में ही भारत का भविष्य है और उनके सामने नेताजी का दर्शन।

18. एक बात और मैं नेताजी के बारे में बताना चाहूंगी कि उन्होंने राष्ट्रीय एकता पर बल देने के उद्देश्य से सदैव इस बात पर बल दिया कि पूरे राष्ट्र की एक भाषा हो जिसे सभी लोग बिना किसी हिचकिचाहट के बोल सकें। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का इन शब्दों में समर्थन किया था। मैं उद्धृत कर रही हूं–

''प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी, दूसरी किसी चीज से नहीं।''

19. इस मौके पर हम एक बार फिर उनकी एवं आज़ाद हिन्द फौज के वीर जवानों की देशभक्ति को याद करते हैं। उनके द्वारा देखे गए सपने हमारे अपने सपने है और उन्हें पूरा करना हम सभी भारतवासियों का कर्तव्य है। हम एक उन्नत भारत, समृद्ध भारत, समान भारत, गरीबी और विषमताओं से रहित भारत के उनके सपने को पूरा करना चाहते

हैं। हमारी जो ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' की कल्पना है, उसका ताना–बाना भी वही है।

20. इससे पहले कि मैं अपनी बात समाप्त करूं, मैं नेताजी सुभाष बोस–आईएनए ट्रस्ट के सभी आयोजकों को धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने बड़ी मेहनत से इस सम्मेलन का आयोजन किया। नेताजी हमारे स्वतंत्रता सेनानी के अग्रणी नेताओं में से थे एवं भारत की आज़ादी में उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। कम–से–कम उनकी राष्ट्रभक्ति की भावना, राष्ट्रवाद एवं उनके त्याग की कथा हमारी युवा पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेंगी। मुझे आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि इस सम्मेलन के आयोजन से नेताजी और उनके आज़ाद हिन्द फौज के बारे में हमारी जानकारी में और वृद्धि होगी।

धन्यवाद।